• बाल कविता...

सबसे पहले

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूंगा,
हवा सवेरे की चलने पर,
हिल, पत्तों का करना 'हर-हर'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले!
आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूंगा,
चिड़िया का डैने फड़का कर
चहक-चहककर उड़ना 'फर-फर'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल सुनहले!
आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज चुनूंगा,
पौधे-पौधे की डाली पर,
फूल खिले जो सुंदर-सुंदर
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले?
लाल, सुनहले
आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे कहता आज फिरूंगा,
कैसे पहला पत्ता डोला,
कैसे पहला पंछी बोला,
कैसे कलियों ने मुंह खोला
कैसे पूरब ने फैलाए बादल पीले,
लाल, सुनहले!
आज उठा मैं सबसे पहले!

■ हरिवंशराय बच्चन

• चुटकुले...

गांव में प्रवचन हो रहे थे-
महाराज बोले-मृत्यु एक अटल सत्य है।
इस गांव का प्रत्येक मनुष्य कभी ना कभी अवश्य मरेगा।
महाराज के वचन सुनकर वहां उपस्थित गांव
के सभी श्रोता रोने लगे।
उन्हीं के बीच बैठा झामलू जोर जोर से हंसने लगा।
महाराज को उसपर बहुत दया आयी।
उन्होंने पूछा-क्यों हंस रहे हो?
झामलू-मैं इस गांव का नहीं हूं!!
आजकल के बच्चो को क्या पता कि struggle क्या है।
हमने वो समय भी देखा है
जब मोबाइल मे 'S' टाइप करना हो तो '7' के बटन को चार बार दबाना पड़ता था।

• जानकारी...

खून का लाल रंग

इंसान के शरीर के ऊपर का रंग कुछ भी हो, काला, गोरा या भूरा, लेकिन उसके भीतर मौजूद खून का रंग हमेशा लाल ही होता है। इंसानों के अलावा जानवरों के खून का रंग भी लाल ही होता है। हालांकि, कुछ जीव इस धरती पर ऐसे भी हैं, जिनके खून का रंग नीला या सफेद होता है। लेकिन ज्यादातर जानवरों के खून का रंग लाल ही होता है चाहे वो किसी भी प्रजाति के हों। चलिए जानते हैं कि आखिर ऐसा क्यों होता है।

खून का लाल रंग मुख्य रूप से एक प्रोटीन, हीमोग्लोबिन के कारण होता है। आपको बता दें, हीमोग्लोबिन एक आयरन युक्त प्रोटीन है, जो लाल रक्त कोशिकाओं यानी एरिथ्रोसाइट्स में पाया जाता है। इसका काम शरीर के अलग-अलग अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाना और कार्बन डाइऑक्साइड को वापस फेफड़ों तक लाना होता है।

विज्ञान की भाषा में इसे समझें तो, जब हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन से बंधा होता है, तो इसका रंग चटक लाल होता है. वहीं जब हीमोग्लोबिन कार्बन डाइऑक्साइड के साथ बंधता है, जिसे आप डिओक्सिहीमोग्लोबिन के नाम से जानते हैं, तो खून का रंग गहरा लाल या नीला हो जाता है। आपको बता दें, हमारे शरीर में मौजूद वेन्स में खून का रंग गहरा होता है, जबकि आर्टरीज में यह रंग चटक लाल होता है।

हीमोग्लोबिन का मेन काम ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना होता है. दरअसल, जब खून शरीर के अलग-अलग अंगों तक पहुंचता है, तो हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन को छोड़ता है और कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया कोशिकाओं के मेटाबॉलिज्म के लिए जरूरी होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि कोशिकाओं को ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है।

हीमोग्लोबिन एक किस्म का प्रोटीन है, जो चार उप-इकाइयों यानी चेन से मिलकर बना होता है। हर चेन में एक हेम ग्रुप होता है, जिसमें आयरन का एक आयन होता है। यह आयरन आयन ऑक्सीजन के साथ बंधने की क्षमता रखता है। जब खून फेफड़ों में जाता है, तो इसमें मौजूद ऑक्सीजन हेम समूहों के आयरन के साथ बंध जाती है, जिससे हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन युक्त यानी ऑक्सीहीमोग्लोबिन बन जाता है।

• गोनू झा

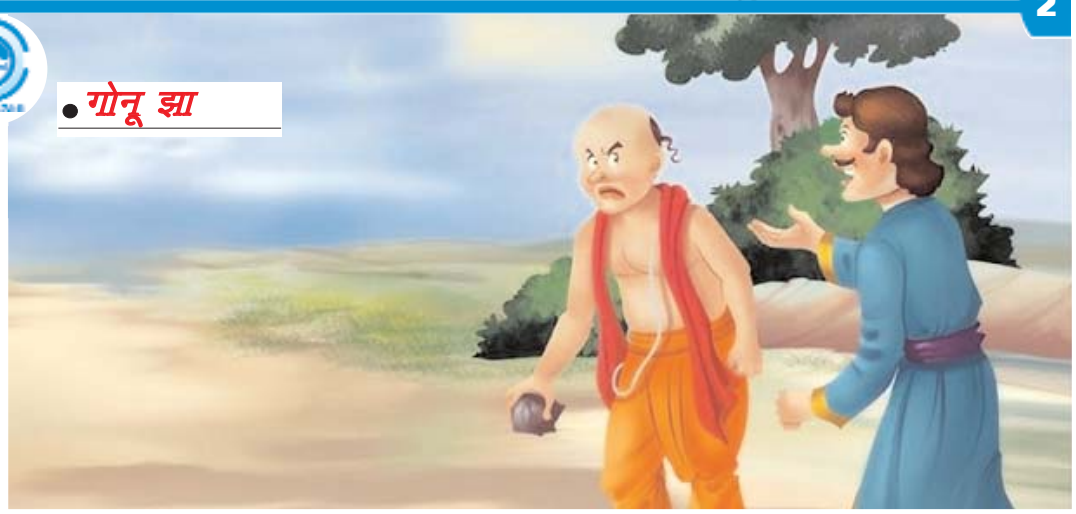

पेड़ पर जेवर

चोर कहीं गया नहीं था। गली में गोनू झा के कमरे की खिड़की के पास दुबककर कमरे में होने वाली बातें सुन रहा था। इस बात का अहसास गोनू झा को भी था। गोनू झा अपनी जगह से उठे और चीखकर पूछा -'पंडिताइन वह बड़का चद्दर कहाँ है?

खोज रहे हैं तो मिलबे नहीं करता है? अरे भगवान, सामान तो ठीक से रखा करो कि जरूरत पड़ने पर तुरन्त मिल जाए।' पंडिताइन उनकी बात सुनकर खीझ उठी...

गतांक से आगे...

दरअसल यह गोनू झा की निजी गली थी जो बगान में पहुँचने के लिए बनाई गई थी। स्थिति को भाँप चुकने के बाद गोनू झा ने ऊँची आवाज में अपनी पत्नी से कहा-'जानती हो पंडिताइन! यह जो भला आदमी आया था वह बता रहा था कि पड़ोस के गाँव में चोरों का उत्पात शुरू हो गया है। निकालो अपने जेवर, सारे के सारे और देखो मेरे बक्से में जितनी भी नकदी है, उसे भी। सब लाओ, जल्दी से। अभी मैं उन्हें बगीचे में ले जाऊँगा और सुरक्षित स्थान देखकर छुपा आऊँगा।

पंडिताइन चकित होकर बाहर आई और कुछ पूछने को उद्यत हुई तो गोनू झा ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

चोर कहीं गया नहीं था। गली में गोनू झा के कमरे की खिड़की के पास दुबककर कमरे में होने वाली बातें सुन रहा था। इस बात का अहसास गोनू झा को भी था। गोनू झा अपनी जगह से उठे और चीखकर पूछा - 'पंडिताइन वह बड़का चद्दर कहाँ है? खोज रहे हैं तो मिलबे नहीं करता है? अरे भगवान, सामान तो ठीक से रखा करो कि जरूरत पड़ने पर तुरन्त मिल जाए।'

पंडिताइन उनकी बात सुनकर खीझ उठी।

गोनू झा उसी तरह गुस्से में झल्लाते हुए ऊँची आवाज में बोले-'सारी रामायण पढ़ गए और सीता किसकी जोरू? अब हम तुमसे कुछ नहीं बताएँगे। मुझे करने दो, जो कर रहा हूँ। बस, अब कुछ बोलना नहीं!'

चोरों के सरदार ने घर में खट-पट की आवाजें सुनीं। तकरीबन एक घंटे तक यह खटाक पटाक रुक-रुककर होता रहा। फिर गोनू झा एक बड़ी-सी पोटली सिर पर उठाए आते दिखे। चोरों का सरदार दीवार से चिपककर साँस रोके खड़ा रहा। गोनू झा सीधे बगीचे में गए। चोरों का सरदार वहीं से बगीचे की आहट लेने लगा। उसने डाल टूटने की आवाज सुनी। पत्ते निचोड़े जाने की आवाजें सुनीं। फिर ऐसी आवाज भी सुनी जैसे कोई किसी ऊँची जगह से छलाँग लगाने से पैदा होती है। उसने मन ही मन अनुमान लगाया कि गोनू झा के सिर पर जो बड़ी-सी पोटली थी, उसमें गोनू झा के घर के कीमती सामान, जेवर व नकदी रहे होंगे जिसे लेकर गोनू झा बगीचे के किसी पेड़ पर चढ़े और किसी डाल पर बाँधकर पेड़ से नीचे उतरने के लिए पेड़ की किसी निचली डाल से उन्होंने छलाँग लगा दी। और अब वे गली की ओर आ रहे होंगे। चोर तेजी से गली के बाहर निकल आया। चोर का अनुमान सही था। थोड़ी ही देर में गोनू झा बगीचे से गली में आए और उससे गुजरकर अपने घर में घुसे और दरवाजा बंद कर लिया।

गोनू झा के बगीचे में एक आम के पेड़ पर मधुमक्खियों का एक बड़ा- सा छत्ता था जिसके बारे में गोनू झा को पहले से पता था। उन्होंने अपने सिर पर जो पोटली रखी थी उसमें घर का कचड़ा भरा था जिसे गोनू झा बगीचे के एक कोने पर बने गड्ढे में फेंक आए थे। अपने कमरे में आकर वे जोर से बोले-'अरे पंडिताइन, अब काहे को मुँह फुलाए बैठी हो? अरे तुम्हें तो इस गोनू झा को धन्यवाद देना चाहिए जो तुम्हारे जेवर को सुरक्षित स्थान पर रख आया है।' आवाज इतनी ऊँची थी कि चोरों के सरदार के कान तक आसानी से पहुँच गई। निस्तब्ध रात थी। अगर कोई आवाज थी तो झींगुरों की झन झन झन झन! बस! गोनू जानते थे कि अब क्या होनेवाला है। वे मुस्कुराते हुए अपने बिस्तर पर आए और लालटेन की बत्ती धीमी की और लेट गए।

तीन पहर रात गुजर चुकी थी कि बगीचे से बहुत जोरों से आवाज हुई-'धप्प!' और इसके साथ ही कोई जोर से चीखा -'बाप रे! बचाओ।'

गोनू झा समझ गए कि क्या हुआ है। उन्होंने पंडिताइन को जगाया। पंडिताइन से कहा कि वे लालटेन लेकर साथ चलें । पंडिताइन के साथ जब गोनू झा बगीचे में पहुँचे तो माजरा देखकर मुस्कुराए बिना नहीं रह पाए। चोर जमीन पर सरकने की कोशिश करता जा रहा था और बेचैनी से बिलबिला रहा था। गोनू झा को समझते देर न लगी कि यह चोर पेड़ पर चढ़ा और मधुमक्खियों के छत्ते को जेवर की पोटली समझकर उसे नोंचने लगा। जाहिर है कि मधुमक्खियों ने उस पर हमला बोल दिया। मधुमक्खियों के डंक के कारण चोर पेड़ से गिर पड़ा और शायद पेड़ से गिरने के कारण उसका पैर टूट गया है जिसके कारण वह घिसट रहा है।

गोनू झा ने बगीचे की जमीन पर पड़े सूखे पत्तों को समेटकर एकत्रित किया और उसमें आग लगा दी जिससे धुआँ उठने लगा और थोड़ी ही देर में मधुमक्खियाँ वहाँ से गायब हो गईं। फिर गोनू झा ने पड़ोसियों को आवाज दी। लोग जगे और बगीचे में पहुँचे। गोनू झा ने उन्हें सारा वाकया बताया। फिर क्या था,लोगों ने चोर को कब्जे में ले लिया। चोर के एक पैर की हड्डी टूट गई थी इसलिए लोगों ने उसकी पिटाई नहीं की । चोर को हवालात भेजने से पहले गोनू झा ने चोरों के सरदार से कहा - 'क्यों भाई? मैंने तुमसे कहा था न कि चोर का इलाज भी बताऊँगा। कैसा रहा इलाज ? ... जय राम जी की!'

-समाप्त

• रोचक...

बबलगम

बबलगम का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन काल से ही लोग अलग-अलग तरह की चीजें चबाते रहे हैं। माना जाता है कि मेसो अमेरिकी लोग चिक्ले नामक एक पेड़ की राल को चबाते थे। इस राल में कुछ प्राकृतिक गुण होते थे जो दांतों को साफ करने और सांस की बदबू दूर करने में मदद करते थे।

19वीं सदी में अमेरिका में चबाने वाली गम को व्यावसायिक रूप से उत्पादित किया जाने लगा। उस समय यह गम मुख्य रूप से रबर से बनाया जाता था, लेकिन बबलगम का आविष्कार कुछ और ही था। विलियम जे. रिगले जूनियर को आधुनिक बबलगम के पिता कहा जाता है। उन्होंने 1892 में अपनी कंपनी शुरू की। उन्होंने चबाने वाली गम के साथ छोटे-छोटे बेकिंग पाउडर के पैकेट दिए थे। लोगों को बेकिंग पाउडर लेने की बजाय गम चबाना ज्यादा पसंद आया। इसी से उन्हें बबलगम बनाने का आइडिया मिला।

• डूब रहे देश ...

दुनिया भर में कई द्वीपीय देश समुद्र के बढ़ते जलस्तर के कारण सबसे ज्यादा खतरे में हैं। इनमें से कुछ प्रमुख देशों में मालदीव, तुवालु, किरिबाती और मार्शल द्वीप शामिल हैं। इन देशों की अधिकांश आबादी समुद्र तल से कुछ मीटर की ऊंचाई पर रहती है। इसके अलावा बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों का भी बुरा हाल है। हाल ही में बांग्लादेश के कुछ तटीय क्षेत्रों में बाढ़ के हालात ने इस समस्या की गंभीरता को और उजागर किया है।